संकीर्तनकार अन्नमाचार्य

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 112

संकीर्तनकार अन्नमाचार्य

तेलुगु मूल

कामिशेट्टि श्रीनिवासुलु ।

अनुवाद

प्रो. यद्दनपूडि वेंकटरमण राव ।

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2013

Srinivasa Bala Bharati - 112
(Children Series)

SANKIRTHANAKAR ANAMACHARYA

Telugu Version
Kamisetty Srinivasulu

Translator
Prof. Yaddanapudi VenkataRamana Rao

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No.967
©All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies:

Price :

Published by
L.V. Subrahmanyam, I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

दो शब्द

नन्हें बच्चों के मन शीतल और स्वच्छ होते हैं। सही रास्ते पर सही पद्धति से संस्करित बच्चे ही भविष्य में भारत के सभ्य नागरिक बनते हैं। संस्कार युक्त भावों को अपनाकर अपने परिवार और अपने देश का नाम ऊँचा करते हैं। सब की प्रतिष्ठा बढ़ाकर उज्ज्वल बनते हैं। हमारे पुराणों के महापुरुष, महान पतिव्रताएँ आदि कैसे रहे थे, वे ऐसे कैसे बने?- इसका समग्र बोध बच्चों को मिलना चाहिए। उनकी गाथाएँ, कहानियाँ, महिमाएँ आदि उन तक पहुँचा सकें तो बच्चों को सही संस्कार मिलेंगे। प्रभाव नन्हें मनों पर संस्कारों की छाप डालेंगे। बच्चों के भविष्य के लिए मार्गदर्शक एवं उपयोगी सिध्द होंगे।

उक्त उद्देश्य के अनुरूप ही ''श्रीनिवास बाल भारती'' शीर्षक पुस्तिका -माला का प्रकाशन तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् कर रहा है। इस में भारत के अनेक प्रसिद्ध आदर्श व्यक्तित्वों और महात्माओं के परिचय हैं। छोटे-छोटे सरल वाक्यों में आकर्षक कथा-कथन पद्धति में प्रस्तुत करने के प्रयास भी हैं। आशा है कि छोटे बच्चे इन्हें अवश्य पसंद करेंगे।

ऐसी योजना की परिकल्पना कर, पुस्तिकाओं के रूप में तैयार कराकर, सही रूप में प्रस्तुत कराने का श्रेय स्वर्गीय डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्य जी को मिलता है। वे हम सब के अभिनंदन के पात्र हैं। इस योजना में सहायता पहुँचानेवाले तेलुगु मूल के लेखक, हिन्दी में रुपांतरित करनेवाले रचइताओं तथा कलाकारों को धन्यवाद।

इन पुस्तिकाओं को बच्चे और बडे सब समादृत करेंगे, यही हमारी आशा है।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.वी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्धेश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

प्राक्कथन

आज के बच्चे ही कल के समाज के आधार हैं। इसीलिए उनको सही नागरिक बनाने का दायित्व और कर्तव्य हर माता-पिता एवं समाज का बनता है। पौधे को ही नहीं सम्हालेंगे तो पेड़ कैसे ठीक बढ़ेगा? बचपन से ही सही आचरण, सदाचार, सच्छीलता जैसे गुणों की ओर बच्चों को जागरूकता से उन्मुख कराकर बढ़ाना होगा। तभी वे कर्तव्यपरायण और दायित्वनिर्वाहक नागरिकों के रूप में रूपाइत होते हैं। ऐसे व्यक्ति ही एक ओर अपने परिवार की उन्नति की दिशा में लगते हुए साथ साथ दूसरी ओर समाज के कल्याण के लिए भी कार्यरत होते हैं। परिणामतः भारत का औन्नत्य भी दुगुना होगा।

बच्चों को, लडकी और लडकों को, ध्यान में रखकर उन्हें आध्यात्मिकता से युक्त सभ्य नागरिकों के रूप में, गुणवानों के रूप में, सुशीलों के रूप में तरासने के उद्देश्य से ही तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति, ने ''श्रीनिवास बाल भारती'' शीर्षक से अच्छी पुस्तकों को उनके हाथ में पहुँचाने की इच्छा से आदर्श पुरुषों, महनीय व्यक्तियों, महायोगियों, पतिव्रता नारियों आदि के दिव्य चरितों को बच्चों की समझमें आनेवाली सरल भाषा में, सुबोध शैली में लिखवाकर देने का अविरल कार्य हाथों में लिया है। ''श्रीनिवास बाल भारती'' शीर्षक देकर एक योजना की परिकल्पना की है। प्रसिद्ध लेखकों और आचार्यों से वृत्त लिखवाकर छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में छपवाकर बच्चों तक पहुँचाया जा रहा है। प्रथमशः यह तेलुगु भाषा में संपन्न किया गया और नयी पुस्तिकाएँ प्रकाशित करने

के प्रयास भी जारी हैं। अब उन्हीं पुस्तिकाओं को हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में विद्वानों द्वारा अनुवाद कराकर समस्त देश में बच्चों तक पहुँचाने का प्रयास आरंभ हो गया है। इसी प्रयास का फल यह पुस्तिका है।

बच्चों को और बच्चों के माता-पिताओं को यह एक महत् दिशा देनेवाला सिध्द होगा। तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् अत्यंत श्रध्दा से इन पुस्तकों को प्रकाशित कर रहा है। बडे लोग भी पढ़ें! अपने बच्चों से पढ़वायें! लाभ उठायें! बच्चों के सुनहले भविष्य के लिए सुदृढ़ रास्तों का निर्माण करें! यही हमारी आशा-आकांक्षा है।

अध्यक्ष
तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम्
शासक मंडली
तिरुपति

एक बात और

बच्चों में धार्मिक भावना और धर्म का ज्ञान बढ़ाना उनके लिए जीवन भर उपयोगी सिध्द होगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् ने ''श्रीनिवास बाल भारती'' योजना बनायी है। इस योजना के प्रथम प्रधान संपादक मान्यवर डॉ.एस. बी. रघुनाथाचार्युलु थे। आप तिरुपति के संस्कृत विद्यापीठ के उपकुलपति भी रहे थे। उन्होंने विद्वानों द्वारा पुस्तकें तैयार कराकर उनको संपादितकर हजारों प्रतियाँ तेलुगु प्रांत के बच्चों तक पहुँचायी हैं।

भारतीय इतिहास ग्रंथों और पुराणों के महापुरुषों, महान पतिव्रता स्त्रियों, संस्कृति के संरक्षकों आदि की जीवन गाथाओं को सरल-सुन्दर शैली में लिखवाकर प्रकाश में लाया गया। प्रांत की पाठशालाओं में इनको पहुँचाकर भविष्य भारत के नागरिकों संस्कारी बनाने का यह एक प्रयास है। धार्मिक साहित्य का परिचय बच्चों को देने की दिशा में तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् का यह प्रथम प्रयास तेलुगु भाषा के माध्यम से संपन्न हुआ है।

प्रयत्न किसी भी प्रकार का हो बड़ों द्वारा ही संपन्न होना चाहिए। घर में माता-पिता अपने बच्चों के प्रथम गुरु होते हैं। इसीलिए वे ही पहले ''श्रीनिवास बाल भारती'' को समादृत करें। इस की सूचना बच्चों को दें। उन्हें पढ़ने केलिए प्रवृत्त करें। तभी बच्चों को आदर्श नागरिक के रूप में अन्तरित करने में सफल होंगे। इस में किसी भी तरह की शंका नहीं होनी चाहिए। बच्चों में नैतिक मूल्य, आध्यात्मक चिंतन आदि के विकास की दिशा में बड़े प्रयत्नशील

होते हैं तो बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल होगा। इस प्रकार के संकल्प में सहायक ''श्रीनिवास बाल भारती'' की पुस्तिकाएँ हैं। अब ये हिन्दी में उपलब्ध हैं। इनका लाभ सभी उठायेंगे-यही कामना है।

- प्रधान संपादक

संकीर्तनकार अन्नमाचार्य

लो तेलुगु माँ अपनी नन्हीं संतान को अंक में भरकर गीत गाती हुई खिला रही है -

''चंदमामा आओ चंदोबा आओ
सुन्दर सोने के बर्तन में
मक्खनी दूध लाओ - - - -''

उक्त भाव का तेलुगु गीत आन्ध्र प्रदेश में आज भी ख्यात है। इस के रचइता कौन हैं? और कौन हो सकते हैं?! ताल्लपाक अन्नमय्या! अन्नमाचार्य नाम से प्रसिध्द अन्नमय्या!

ये बालाजी के अत्यंत भक्त और तेलुगु के प्रथम वाग्गेयकार! वग्गेयकार मानी भक्ति गीत स्वयं रचकर भक्ति में विभोर हो गानेवाला। तेलुगु के प्रथम पदकार हैं अन्नमाचार्य। पदकविता पितामह भी कहलाये जाते हैं। भगवान श्री वेंकटेश्वर अन्नमय्या का गीत सुनकर ही सुबह जगते हैं और उनका गीत सुनकर ही रात को सोते हैं। भगवान को ही नहीं उनकी पत्नी लक्ष्मीदेवी, अलिवेलमंगा को भी अन्नमय्या के गीत उतने ही पसंद हैं। कहते है कि अन्नमय्या गाते हैं तो अलमेलमंगम्मा आनंद से नाचती हैं। ऐसे महान भक्त शिरोमणि के बारे में जानने की इच्छा किस के मन में नहीं जगेगी। चलो, उनके बारे में कुछ जानकारी पायें।

लगभग छह सौ वर्ष पहले की बात है।

ताल्लपाक

आन्ध्र प्रदेश के ''कड़पा'' जिले के राजंपेट तहसील में ताल्लपाक नामक एक छोटा गाँव है। वहाँ दो मंदिर हैं- एक भगवान चेन्नकेशव

स्वामी का और दूसरा सिध्देश्वर स्वामी का। चेन्नकेशव स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा महाभारत के जनमेजय ने की है। मान्यता है कि इस भगवान की आराधना रोज देवता, ऋषि, सिध्द आदि करते हैं। इसी मंदिर के आश्रय में कुछ ब्राह्मण परिवार वहाँ जीवन यापन करते थे। उनमें नारायणय्या प्रसिध्द हैं। उनकी ही चौथी पीढ़ी में एक और नारायणय्या का जन्म हुआ। इसी नारायणय्या से हमारे अन्नमय्या की गाथा आरंभ होती है।

नारायणय्या ने बचपन में बडी कदम उठायी

नारायणय्या बचपन में पढ़ने में पीछे पडा। उसके पिता ने डरा-धमका कर पढ़ने के लिए बहुत कहा। परन्तु कोई लाभ नहीं दिखा। सोच-विचार कर गाँव के पास के ही ऊटुकूरु नामक एक और गाँव में रहनेवाले अपने बन्धु जनों के पास उस बालक को रखा गया। वहाँ की पाठशाला के अध्यापकों ने अनेकों प्रयत्न किये। नारायणय्या की आँखो में आँसू तो निकले पर मुँह से सरस्वती नहीं बोली। सामान्य प्रयासों से हार बालक को अनेक प्रकार के दण्ड दिये। इनसे त्रस्त नारायणय्या का मृदु मानस घायल हो गया। इतना ही नहीं सब उसकी अवहेलना करने लगे। लज्जा से, अवहेलना से वह क्षुभित हो गया। उसने सोचा कि इससे मृत्यु भली। इसी प्रकार की बातें उसने अन्यों से भी सुनी थीं। गाँव के पास चिंतलम्मा देवी (भक्तों की चिंताएँ दूर करनेवाली माता) का मंदिर था। उसमें एक लंबी बाँबी थी। सुना था कि इस में एक बहुत बडा जहरीला साँप रहता है। पास जाकर उसने बाँबी में हाथ रखा। सोचा था कि साँप डसेगा और उसकी मृत्यु आसानी से हो जायेगी। लेकिन साँप न

डसा। चिंतलम्मा देवी प्रत्यक्ष हुई। बालक नारायणय्या रोता हुआ देवी माता के चरणों पर गिरा। माता ने उसे अपनी गोद में ले ली और कहा- ''बेटा! क्यों तुम इस प्रकार आत्महत्या पर तुले हो। तुम्हारी तीसरी पीढ़ी में एक महान हरि भक्त जन्म लेनेवाला है। उससे तुम्हारा वंश तरेगा। तुम्हें भी विद्या लाभ होगा। ताल्लपाक चेन्नकेशव स्वामी की कृपा तुम्हें अवश्य मिलेगी।'' देवी माता अदृश्य हुई। बालक नारायणय्या की चिंता शमित हो गयी। देवी माता की आज्ञा उसने स्वीकारी। उसे विद्याएँ सिध्द हुईं। इसी नारायणय्या के पुत्र हैं नारायण सूरि।

तिरुमल की तीर्थयात्रा

नारायण सूरि कवि पंडित हैं। उनकी पत्नी का नाम लक्कमांबा है। वे मधुर स्वर में गाती हैं। वे माडुवूरु की हैं। कहा जाता है कि वहाँ के चेन्नकेशव स्वामी इन से वार्तालाप करते थे। इस पुण्यदंपति ने संतान के लिए अनेक व्रत रखें। सभी देवताओं की आराधना की। उनकी एकमात्र इच्छा थी कि उन्हें एक सुयोग्य पुत्र हो। उन्होंने सप्तगिरियों के अधिदेव श्री वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की कि ''हे भगवान! हमें एक पुत्र दो।'' एक शुभ दिन को इसी कामना से दंपति ने भगवान बालाजी के दर्शन के लिए तिरुमल की तीर्थयात्रा का निर्णय लिया।

लक्कमांबा और नारायण सूरि तिरुमल पहुँचे। स्वामी के मंदिर में प्रवेश किया। गरुड़ स्तंभ के पास दण्डवत प्रणमित हुए। बस, वे एक सम्मोहन की स्थिति में पहुँच गये। आँखों के सामने चकाचौंध

करनेवाली काँति। उस तेजस में एक चमकनेवाला खड्ग उनके हाथों में धरा गया। फिर सब कुछ अदृश्य। भगवान वेंकटेश्वर ने ही अपनी तलवार 'नंदकम्' को उस पुण्य दंपति को वर प्रदान के रूप में उनके हाथ में रखा था। उनको परम आनंद हुआ। इसके बाद दंपति ने भक्ति पूर्वक वेंकटाचलपति का दर्शन किया। आत्म तोष के साथ वे ताल्लपाक गाँव वापस लौटे।

अन्नमय्या का जन्म

लक्कमांबा ने गर्भ धारण किया। वैशाख का महीना था। विशाखा नक्षत्र में जब तीन ग्रह शुभ दशा में तब एक लड़के का आविर्भाव हुआ। वह सन् 1408 का समय था। भगवान विष्णु की तलवार 'नंदकम्' के अंश से शिशु का जन्म हुआ। बालक का नामकरण हुआ। नाम रखा गया- अन्नमय्या। बालक अन्नमय्या अपने तोतले मुँह के मंद मुस्कानों के साथ सब को आकर्षित करने लगे। बार बार श्री वेंकटेश्वर नाम सुनते ही नन्हें नन्हें हाथों से नमस्कार करते थे। बालाजी का नाम सुनने के बाद ही दूध पीते। वेंकटपति पर गाये जानेवाले झूलने के गीत सुने बिना वे सोते भी नहीं थे। माता लक्कमांबा भक्ति गीत गाती है तो सुन कर सिर हिलाते, मानों सब कुछ उनकी समझ में आ गया हो। पिता नारायण सूरि काव्यों का अर्थ जब दूसरों को समझाते तो झूले का बच्चा अन्नमय्या ''ऊँ ऊँ'' करते थे।

अन्नमय्या का बचपन

अन्नमय्या पाँच वर्ष के हो गये। वे एकसंथाग्राही थे। यानी एक बार सुनकर ही दुहराने की शक्ति रखनेवाले थे। गुरु जो भी पाठ

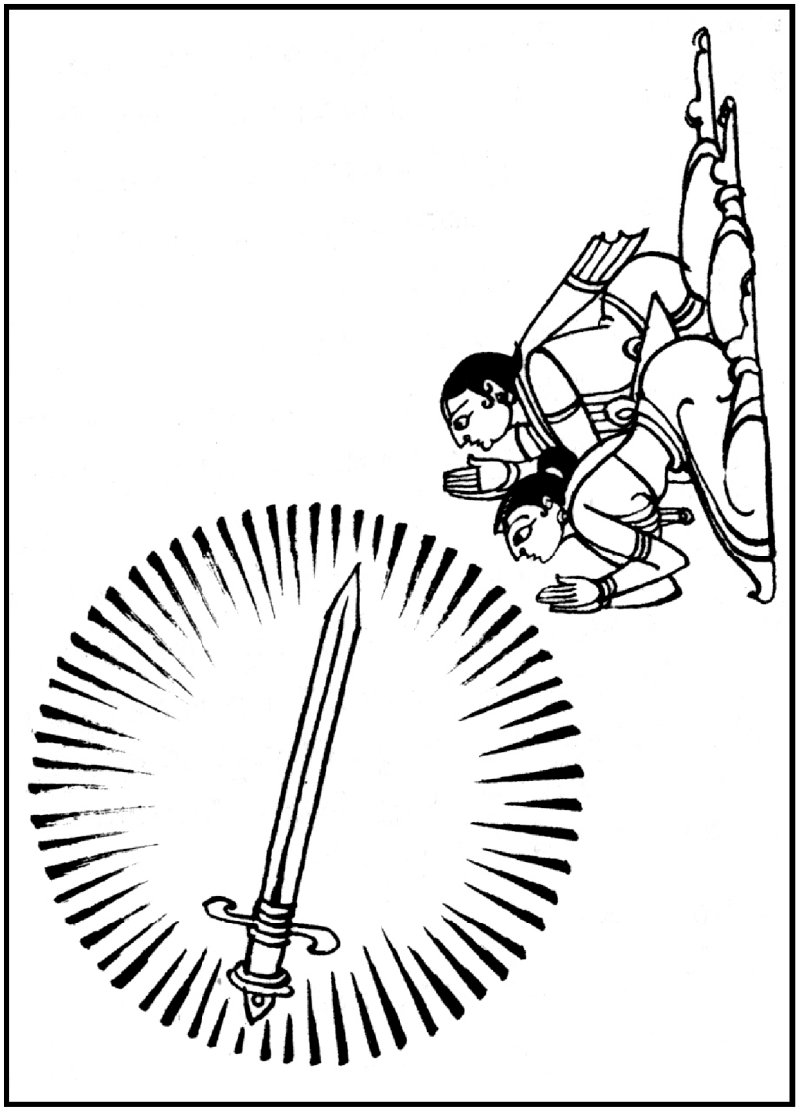

पढ़ाते थे उसे ज्यों का त्यों उन्हें सुना देते थे। याद भी रख लेते थे। उनकी अद्‌भुत स्मरण शक्ति थी। उस पर सब आश्चर्य चकित हो जाते थे। एक समय आया, गुरुओं ने समझा कि अब अन्नमय्या को सिखाने के लिए उनके पास कुछ रह नहीं गया। अन्नमय्या के मुँह से अब जो भी निकलता वह अमृतमय काव्य बन जाता था। वे जो भी गीत गाते थे वह परम संगीत से युक्त हो जाता था। अन्नमय्या चेन्नकेशव मंदिर जाते थे। भगवान चेन्नकेशव को उन्होंने ''नन्हा केशव'' पुकरा था।

बालक अन्नमय्या की बातों से स्वयं चेन्नकेशव स्वामी आनंद पाते थे। सुनकर मंदमुस्कान चेहरे पर छा जाता था। अन्नमय्या हमेशा खेलों में और भक्ति गीत बनाकर गाने में मस्त रहते थे। तालाब के बान्धों तक पहुँचकर उन पर विराजमान वृक्षों के हिलते पत्तों के सुर में सुर मिलाकर गाते थे। मंद मंद हवाओं में झूमते सुर लहरियों को बिखेरते थे। तालाब की लहरियों पर झूलनेवाले कमलों को देखकर स्वयं उछल-कूद करते थे। कन्या बालाएँ जब ज़ाजर गीत गाती तो उनके पास पहुँचकर उनकी मजाक करते। रागों में गलतियाँ निकालते। सही ताल पर गीत गाकर उन्हें सुनाते और कहते कि ''तुम लोगों को कुछ नहीं आता''। खेत निराते समय गानेवाले गीतों में और कुओं से खेतों के लिए पानी को निकालते समय जानपदों के गीतों के साथ सुर मिलाकर गाते थे। अन्नमय्या के गीतों और बातों पर गाँव के लोग लट्टू होते थे।

घर का काम कौन करेगा?

नारायण सूरि का परिवार बडा था। संयुक्त परिवार था। संयुक्त परिवारों में छोटी-मोटी मनमुटावों का होना सहज ही था।

बिन कारण नाराजियाँ, बेमतलब के झगड़े सामान्य होते हैं। लोग चुटकी भर में हिल-मिल भी जाते हैं। एक दिन नारायण सूरि के परिवार के लोग मिलकर अन्नमय्या पर टूट पडे। अन्नमय्या को कुछ भी समझ में नहीं आ पाया। घर के लोग कहने लगी- - - ''तू हमेशा एक डंडी भुजा पर डालकर बेतुकी गीत गाता रहता है। क्या यही तेरा काम है? घर का कोई काम तू नहीं करेगा? घर का काम नहीं करेगा तो कौन करेगा?'' घरवालों से तानें मिली। आगे चेतावनी के शब्द- ''अब तू बेतुकी गीतों को बन्द कर। जंगल में जा। पशुओं के लिए घास काट कर ला दे।'' पता नहीं किस परेशानी से गुजर रहे थे, पिता नारायण सूरि ने भी अपने पुत्र अन्नमय्या को डाँटा। लक्कमांबा ने पुत्र की ओर प्रेम से देखा। वे लाचार थीं। अन्नमय्या की लाचारी पर वे तरस खा गयीं। अन्नमय्या के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। हसिया हाथ में लेकर जंगल की ओर चल पडे।

किसका कौन?

जंगल में जाकर काम करना अन्नमय्या के लिए नया ही था। आदत नहीं थी। पहले एक पेड़ के नीचे बैठे। तंबूरा (तानपूरा) हाथ में थी। तार संभाल कर गाना चाहते थे। बगल में हसिया! उसकी ओर देखते ही जंगल में आने का कारण समझ में आया। चारों ओर देखा। हरी घास खूब फैली थी। हसिया लेकर घास काटने लगे। बस उनके मुँह से शब्द निकला- ''ओह, माँ!'' उनकी छोटी ऊँगली कटी। रक्त बह रहा था। उसे देखते ही उनके सिर में चक्कर आया। दर्द से कराहने लगे। सोचने लगे- ''इस स्थिति का कारण क्या है? कारक कौन हैं? एक बार अपने माता-पिता और बन्धु गण का

स्मरण किया। सोचा- ''सब झूठ है। इन में अपना कोई नहीं। लौकिक बन्धनों से कुछ होनेवाला नहीं है।'' उसी समय तिरुपति की ओर जानेवाला एक भक्त-समूह दिखाई पड़ा। वे खेलते-गाते आगे बढ़ रहे थे। हाथ में धरे हसिये को दूर फेंका। तानपूरा हाथ में लेकर उस भक्त मंडली में मिल गये।

अन्नमय्या तिरुपति पहुँचे

वे तीर्थयात्री और कोई नहीं थे। सनकादि महामुनियों का समूह था। महाभक्तों का सच्चा समागम था। उनकी वेषभूषा बहुत ही निराली थी। हिरण के चर्म से बने किरीट धारण किये हुए थे। अभ्रक और पत्तों को जोडकर बने कपडे पहने थे। ललाट पर त्रिपुंड्र! यानी तिरु नामम्! शंख और चक्र की अंकित मुद्राएँ! पैरों में काँच के नूपुर, हाथ में बाण! बहुत ही विचित्र रूप में प्रकाशमान थीं उनकी आकृतियाँ! हाथ में एकतारा, ताल बजाते हुए वे बढ़ रहे थे। डपली नाद के बीच नाच-गान में मग्न तथा परवशता में डूबे! ''गोविन्दा, गोविंदा'' नाम-जप घोष के साथ मंडली जा रही थी। अन्नमय्या उस के साथ साथ तिरुपति पहुँचे।

वह लो! वहाँ लो!!

तिरुपति पहुँचते ही श्रीवेंकटेश्वर की बहिन तिरुपति की माता गंगम्मा के मंदिर गये। वे तिरुपति की ग्राम देवता माँ है। उनको अपना प्रथम नमस्कार अर्पित कर अलिपिरि (तिरुमल के सप्तगिरियों का आरंभिक तल भाग को अलिपिरि कहते हैं) पहुँचे। वहाँ श्रीनृसिंह स्वामी का दर्शन किया। अलिपिरि का ही एक और नाम नक्षत्रों का पहाड़ है। भगवान के पास पहुँचने की यह पहली सीढ़ी है। यहाँ

''तलेरु गुण्डु'' है। यह एक बडा चट्टान है। उस पर हनुमान की मूर्ति है। अन्नमय्या ने ''तलेरु गुण्डु'' को प्रणाम किया। कहते हैं कि इस की अनेक महिमाएँ हैं। पहाड़ पर सीढ़ियों के रास्ते से चलनेवाले भक्त अगर सिर और घुटनों से इस चट्टान को छूते हैं तो उनको सिर में और घुटनों में दर्द होती ही नहीं। यह सभी भक्तों का विश्वास है। वहाँ से ऊँचे और विशाल पर्वत शिखरों का दर्शन भाग्य अन्नमय्या ने प्राप्त किया। वे पर्वत शिखर तो उन्हें आदि शेष की फणिमालाओं के समान दिखे। आनंदोत्साह से उन्होने एक गीत गया- - -

लो वही, है वही श्रीहरि का वास,
सहस्र फणिगण विलसित शेष धाम!

लो वही वेंकटाचल, अखिल लोक वंदित
लो वही ब्रह्मादियों से अनवरत आराधित!
लो वही निवास स्थान अखिल मुनि गण का
देख वही, प्रणमित हो, वही निलय आनंद का!

पास ही लो शेषाचल निश्चल
समस्त सुरलोक का वास स्थल!
आँगन में देख, वहीं मूल धन
सुवर्ण शिखरों का गण बहु ब्रह्म सन!

कैवल्य पद वेंकटाचल वही
श्री वेंकटपति अंचल निधि वही
भावित सकल संपत्तियों का धाम वही
पावन गुणों का पावनमय नाम वही!

अन्नमय्या थक गये

अन्नमय्या बालक ही थे। सीढ़ियों से चढ़ रहे थे। अलिपिरि का शिखर गोपुर समीपवर्ती था। वहाँ की सीधी चढ़ाई थी। इसे तेलुगु में ''पेद्द येक्कुडु'' (=ऊँची चढ़ान) नाम से पुकारते हैं। उत्साह के साथ अन्नमय्या शिखर तक पहुँचे। उस शिखर को ''गालि गोपुरम्'' (वायु गोपुरम्) कहते हैं। उन्होंने उसे पार किया। कुछ ही दूर पर कर्पूर नहर है। वहाँ से सुगन्धी हवाएँ बहती थीं। घने पेड, गहरी लताओं के कुंज, प्रवाहमान पहाडी जल-धाराएँ-सुन्दर प्रकृति को निहारते हुए घुटनों के पहाड (मोकाल्ल मिट्ट) तक पहुँचे। मध्याह्न का समय था। कडी धूप का पहला अनुभव था! सूर्य भगवान की तीक्षण किरणें! आठ वर्षों का बालक अन्नमय्या! बुरी तरह से थका बालक! भूख सता रही थी। बेहोशी छाने लगी। वहाँ पास के बाँसों की झुरमुट के पास ही लेट गये। अन्नमय्या पैरों में चप्पल पहने थे। बाँसों के बीच से बहनेवाली हवा के कारण मधुर धुन निकलने लगी। वही अन्नमय्या के लिए झूले का गीत बन गया।

माता अलमेलमंगम्मा की कृपा

अन्नमय्या की थकान और भूख पर चाहे और किसी की दृष्टि न पडी हो, अलमेलमंगम्मा (वेंकटेश्वर भगवान की पत्नी) ने अवश्य पहचाना। वे समस्त जगत की माँ हैं। वे बड़ी सुमंगली के रूप में अन्नमय्या के पास पहुँची। उन्हें अपनी गोद में ली। थपकी देती हुई अन्नमय्या को जगायी। - - - ''उठ बेटा उठ! उठकर इधर देख!'' अन्नमय्या ने अनुभव किया कि अपनी माँ लक्कमांबा उन्हें पुकार रही हैं।

''माँ'' कहते हुए अन्नमय्या उठे। लेकिन पाया कि अपनी आँखों के सामने कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा हैं। माता के अमृत स्पर्श का सुख उन्हें मिल रहा था। मकरंद युक्त मधुर मधुर माता के शब्द कानों को सुख पहुँचा रहे थे। अन्नमय्या को कुछ नहीं सूझा। बोले-- ''माँ! मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।'' माता अलमेल मंगम्मा ने बालक को सांत्वना देती हुई कहा- ''बेटा! यह पर्वत सालग्राम शिलाओं से युक्त है। पहले चप्पल निकाल कर तो देख!'' अन्नमय्या ने चप्पलें निकालीं। समस्त पहाड़ तेजोमय दिखा। हर वृक्ष में मुनि प्रवर दिखाई देने लगे। वनचर जंतु समूह में देवतागण दिखाई देने लगा। क्रम से हरि के दशावतारों का दर्शन भाग्य मिला। अन्नमय्या ने पर्वत को नमन किया। माता अलमेल मंगम्मा ने उसे पास लेकर प्रसाद खिलाया। बस प्रसाद लेते ही अन्नमय्या में माता सरस्वती का अंश प्रवेश हो गया। उनके कंठ से कविता धारा बही। भक्ति पूर्वक एक शतक का आविर्भाव हो गया। उसे माता अलमेल मंगम्मा को ही अर्पित किया। शतक चंपक माला और उत्पलमाला वृत्तों में था। चंपक और उत्पल दोनों फूल हैं। फूलों की एक माला ही है वह शतक। पद्मों के बीच एक पद्म में अवतरित माता को ही शतक अर्पित! ''अलमेल मंगा'' का अर्थ ही है ''फूल पर विकसी युवती''-

माता को ताल्लपाकधनी अन्नमय्या से गुंथित पद्य शतक
प्रेम पूर्ण वाक् प्रसूनसभक्ति अर्पित अलमेलमंगा को
निश्चल मन से ग्रहण कर युग युगों ब्रह्म कल्पों तक
सदिच्छा से बसें जवानी लीलाओं के प्रभु वेंकटेश्वर!

(उत्पलमाला छन्द का स्वेच्छानुवाद)

पुष्करिणी स्नान

अन्नमय्या तिरुमल पहुँचे। सीधे पुष्करिणी के पास गये। तिरुमल पर विलसित पुष्करिणी को ''स्वामि पुष्करिणी'' कहते हैं। यह सरोवरों का राजा ही है। कहते हैं कि हजारों पुण्य नदियों का पवित्र जल आकर इस में मिलता है। पुष्करिणि स्नान समस्त पापों को दूर करनेवाला है। पुष्करिणी के पुण्य जलों में अन्नमय्या ने पवित्र स्नान किया।

वराह क्षेत्र

पुष्करिणी स्नान से अन्नमय्या की थकान गायब हो गयी! सब दर्द दूर!! मन निर्मल बन गया। अन्नमय्या ने पुष्करिणी तट पर ही विराजमान वराह स्वामी का दर्शन किया। तिरुमल क्षेत्र वराह क्षेत्र है। यहाँ आदि वराह स्वामी रहते हैं। उन्होंने ही श्रीवेंकटेश्वर भगवान को यहाँ रहने की जगह और अनुमति दी थी। इस के प्रति कृतज्ञता भाव रखकर भगवान बालाजी ने भक्तों के लिए एक शर्त रखी है कि वे पहले वराह स्वामी का दर्शन करें बाद में उनका। तभी भक्तों को पूरा फल मिलेगा। आज भी प्रथम पूजा और नैवेद्य अर्पण वराह स्वामी को ही होते है।

अन्नमय्या का मन्दिर प्रवेश

आदि वराह स्वामी की सेवा के उपरान्त अन्नमय्या श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर तक पहुँचे। प्रधान गोपुर की ओर आश्चर्य से देखा। पास ही एक इमली का पेड था। कहते हैं कि स्वामी इस पेड के पास एक सांप की बाँबी में तपस्या रत थे। उस पेडके सामने हाथ जोडे।

कामनाओं की पूर्ति करनेवाले गरुड स्तंभ के सामने दण्डवत प्रणाम किया। वहाँ पहले चंपक वृक्ष समूह था। उसकी प्रदक्षणा की। विमान वेंकटेश्वर का दर्शन किया। रामानुजाचार्य को भी अपनी सेवा अर्पित की। योग नरसिंह स्वामी और जनार्दन स्वामी दोनों के सामने नमन किया। यागशाला का दर्शन लिया। कल्याण मण्डप (विवाह वेदिका स्थल) को निरखा। वाहन मंटप में अश्ववाहन, गरुड, आदि शेष आदि के सामने झुक कर नमस्कार किया। यात्रियों के साथ गोविन्द नाम स्मरण करते हुए मूल विराट मूर्ति के दर्शनार्थ आगे बढ़े। सोने के पिंजडों से पंचवर्ण तोते मधुर स्वर में कहते मिले - - ''धीरे धीरे चलो! भगवान को मनौतियाँ अर्पित करो। पहाड़ों के राजा को दण्डवत प्रणाम करो! सारी कामनाएँ पूरी होंगी। ''स्वामी के श्री भाण्डागार को भी अन्नमय्या ने देखा। अपनी धोती के आंचल में बंधे एक मुहर निकाले और भगवान की हुण्डी में डाला।

दिव्य मंगल मूर्ति का दर्शन

अन्नमय्या स्वामी की सन्निधि में पहुँचे। सुवर्ण द्वार (सोने के दरवाजों) के बीच खडे हो कर श्रीनिवास का दर्शन किया। पुलकित हो गये। एकटक भगवान के स्वारुप के दर्शन का आनंद लेने लगे। एक हाथ में सुदर्शन चक्र, एक और हाथ में शंख, नाभि में माणिक्य, सूर्य कठारि, पैरों में नूपुर, पीतांबर वस्त्र, कटि पर एक हाथ, वर प्रदान करनेवाला एक वरद हस्त, कानों में प्रकाशमान मणि-कुण्डल, नवल कांतियों को प्रसारित करनेवाला मुख मण्डल, मोतियों का तिरुनाम, चकाचौंध करनेवाला रत्नकिरीट, शरीर से व्याप्त सुगन्ध, किरीट की दोनों ओरों से कुमुद पुष्प माला, वन माला, श्रीवत्सम्,

कौस्तुभम्, अमूल्य आभरण - - - भगवान श्रीवेंकटेश्वर की दिव्य मंगल मुर्ति!! दर्शन मिला अन्नमय्या को हृदय भर गया। शरीर पुलकांकित हुआ। हृदय स्पंदित हुआ। भाव गति भक्ति गीति में प्रसरित हो गयी - - -

आपको अब पहचाना हे पुरुषोत्तम्,
मुझे मत छोडना हे पुष्करिणीनाथ!
चाहा आप को ही हे कुल दैव,
सोच-समझ दिया बड़ोंने हे हमारी निधि!
प्यास बुझाने वाले हे श्यामल घन,!
हमारे मन में ही बसना, हे श्रीनिवास!

- - - - - - - - - - - -

अन्नमय्या के गीत को सुनकर पुजारी वर्ग मुग्ध हो गया। बालक पास लेकर तीर्थ-प्रसाद दिया। सिर पर शठकोप रखकर आशीर्वाद दिये। ये भगवान के ही आशीर्वाद थे। अन्नमय्या ने उस दिन मंटप में ही विश्राम किया।

पुण्य तीर्थों में स्नान

वह एकादशी का दिन था। पहाड़पर विलसित दिव्य तीर्थों के दर्शन की इच्छा से अन्नमय्या निकले। 'कुमारधारा तीर्थ'' पहुँचे। कुमार स्वामी ने तारकासुर का वध किया था न! परिणामतः शिव पुत्र कुमार स्वामी को ब्रह्महत्या-पाप लग गया था। कहा जाता है कि पाप से मुक्ति पाने के लिए षण्मुख कुमार स्वामी ने यहीं तपस्या की थी। कुमार धारा तीर्थ के रूप में यह प्रसिध्द हो गया। यहाँ से अन्नमय्याने 'अमर तीर्थ' पहुँचे। विश्वास है कि यहाँ तीन करोड

देवता रोज पुण्य स्नान करने आते हैं। इस में स्नान करने के बाद अन्नमय्याने 'आकाश गंगा' तीर्थ का दर्शन किया। मान्यता है कि बारह वर्ष की तपस्या के फल स्वरूप अंजना देवी ने यहीं हनुमान को जन्म दिया था। सप्त गिरियों में एक गिरि का नाम अंजनाद्रि है। बाद में 'पापविनाशनम्' के जल प्रपात में अन्नमय्या ने पवित्र स्नान किया। इन तीर्थों में पवित्र स्नान के बाद अन्नमय्या भींगे कपडों को सुखाते भी थे। जब तक कपडे सूखते तब तक एक भक्ति शतक आशु रूप में उभर आता था।

मोतियों का हार नीचे गिरा

एक दिन अन्नमय्या स्नान और संध्याओं के बाद भगवान श्रीवेंकटेश्वर के दर्शन के लिए मंदिर में पहुँचे। लेकिन मंदिर के दरवाजे बन्द मिले। सोने के द्वार पर ताले लगे थे। वेदना युक्त हृदय से उन्होंने एक गीत गाया। आश्चर्य! ताले टूटे। दरवाजे खुले। अर्चक भयभीत हुए। ''अपराध हो गया - - - अपराध हो गया - - - ।'' कहते हुए अन्नमय्या को मंदिर में ले गये।

मंदिर में अन्नमय्या ने गरुडाल्वार, विष्वक्सेन, सुग्रीव, हनुमान आदि विष्णु भक्तों और सीता-राम-लक्ष्मण की मूर्तियों का दर्शन किया। इस के बाद भगवान बालाजी वेंकटेश्वर के दर्शनार्थ मूल विराट मुर्ति के सम्मुख में गये। अर्चक स्वामी भगवान की अर्चना कर रहे थे। अन्नमय्या ने भक्ति भावावेश में एक पद्य-शतक भगवान को अर्पित किया। बस, श्रीवेंकटेश्वर के कंठ से मोतियों का हार गिरा। अर्चक संभ्रमित हो गये। बालक अन्नमय्या की महत्ता को स्वीकारा। उस समय अर्चक ने कहा था- ''यह सामान्य भक्त नहीं है। पुष्कर

राय का ही दिव्य प्रसाद है।'' चंदन, तीर्थ और प्रसाद देकर मन से आशीर्वाद दिये। अन्नमय्या ने पुष्करिणी तट पर बैठ कर भगवान का प्रसाद लिया। भगवान की महिमाओं का स्मरण करते और वराह स्वामी के मंदिर में विश्राम लेते अन्नमय्या तिरुमल पर रहे हैं।

घनविष्णु का सपना

उन दिनों में घनविष्णु नामक एक वैष्णव यति तिरुमल में रहते थे। वे माधव सेवा में रत रहकर भक्तों को विष्णु तत्त्व का बोध करते थे। उन्होंने अपने जीवन को शेषाद्रिनिलयवासी को अर्पित कर रखा था। वह द्वादशी का पवित्र दिन था। उस दिन की रात को वेंकटपति ने उस यति को सपने में दर्शन देकर आदेश दिया - - - ''हे यतीन्द्र! ताल्लपाक अन्नमय्या नामक एक भक्त कल तुम्हारे पास आयेगा। वह काला है, परन्तु सुन्दर है। हमेशा मेरे ऊपर गीत गाता रहता है। उसके कानों में कुण्डल लटकते रहते हैं। हाथ में एकतारा रहती है। उसे तुम मुद्रांकित करो। लो ये मेरी मुद्रिकाएँ।'' भगवान अन्तर्धान हुए। घनविष्णु यति जागे। सामने भगवान की मुद्रिकाएँ मिलीं।

पंचसंस्कार दीक्षा

दूसरे दिन सुबह ही घनविष्णु यति स्नान-संध्यादि से निवृत्त हो कर मंदिर की यज्ञशाला में प्रतीक्षा में खडे रहे। उनके हाथों में शंख और चक्र की मुद्रिकाएँ थीं। अन्नमय्या ने प्रातः काल में ही पुष्करिणी मे स्नान किया। वराह स्वामी का दर्शन लिया। श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में प्रथम प्राकार की प्रदक्षिणा की। हरिनाम संकीर्तन के साथ यज्ञशाला में पहुँचे। बस, घनविष्णु यति ने उस बालक को देखा।

उस में भगवान की कही निशानें मिलीं। बालक अन्नमय्या को पास बुलाया।

पूछा- ''बैटा! तुम्हारा नाम क्या है?''

अन्नमय्या ने यति का अभिवादन किया। प्रवरा के साथ (मंत्र युक्त प्रणाली में गोत्र नाम और वंशावली कथन को प्रवरा कहते हैं) कहा-

''अन्नमय्या''

यतीन्द्र की आँखों में आनंद युक्त चमक-

''मैं तुम्हें मुद्रांकित करुँगा। क्या तुम चाहते हो?'' अन्नमय्या ने यति की ओर देखा। उनको यति में भगवान बालाजी का दर्शन हो गया। उनके मुँह से शब्द निकले - - -

''मैं कृतार्थ हूँ।''

घनविष्णु ने वेद-विधि से अन्नमय्या का पंचसंस्कार किया। सभी वैष्णवों को सारा वृत्त सुनाया। वैष्णव समूह में संतोष की लहर छायी। अन्नमय्या वैष्णव मुद्रांकित हो गये। अन्नमय्या से अन्नमाचार्य बने। वैष्णव पंक्ति में बैठकर भोजन किया।

पुत्र की तलाश में

बालक अन्नमय्या घर में कहे बिना तिरुमल पहुँचे थे। यहाँ ताल्लपाक गाँव में माता-पिता अपने पुत्र को ढूँढ-ढूँढ कर थक गये। निराशा की भावना ने उन्हें और कृषित कर दिया। लक्कमांबा तो

चेन्नकेशव स्वामी का मंदिर छोड बाहर आयीं ही नहीं। ''अन्ना, अन्ना'' की रट लगाकर बैठी थीं। नारायणय्या तो पागल-से हो गये थे।

वह द्वादशी का दिन था। गाँव के सब लोगों ने मिलकर मंदिर में विशेष पूजाएँ संपन्न करवायीं। लक्कमांबा भजन करती हुई बेहोश हो गयीं। बेहोशी में कुछ बडबड़ाने लगीं - - - ''तिरुमलप्पा - - - अन्नमय्या - - - तिरुमलप्पा - - - अन्नमय्या''। नारायणय्या ने पत्नी की बड़बड़ाहट सुनी। उन्हें कुछ स्फुरित हो गया। दूसरे ही दिन लक्कमांबा को साथ लेकर तिरुमल के लिए निकले।

खोयी निधि पायी

तिरुमल पर अन्नमाचार्य घनविष्णु यति के पास रहकर विष्णु तत्त्व को समझ रहे थे। यति भी उनको प्रेम और आदर के साथ देख रहे थे। गुरु के कहे अनुसार अन्नमय्या संकीर्तन गाते थे। उस दिन मंदिर के सामने मंटप में बैठकर अन्नमाचार्य तन्मयता से भागवत संकीर्तन में लीन थे। सैकड़ों हरि भक्त परवशता में भक्ति गीत सुन रहे थे। तिरुमल पहुँचे हुए लक्कमांबा और नारायण सूरि ने गीत सुना। पुत्र की कंठ ध्वनि पहचानी। उनके संतोष की सीमा नहीं। ''अन्न, अन्ना'' पुकारती हुई लक्कमांबा गायक की ओर दौड़ी। माँ की पुकार से अन्नमाचार्य की सुर लहरी थमी। ''माँ'' कहते हुए माता की गोद में गिरे। पिता नारायण सूरि में आनन्द और गर्व दोनों एक साथ संचरित हुए। पुत्र को पास लिए। पुत्र में आये परिवर्तन को देखा और समझा।

''स्वामी! भगवान वेंकटेशा! यह तो आपका ही वर प्रसाद है। अब तो आपका ही हो गया। इस की रक्षा का भार अब आपका ही

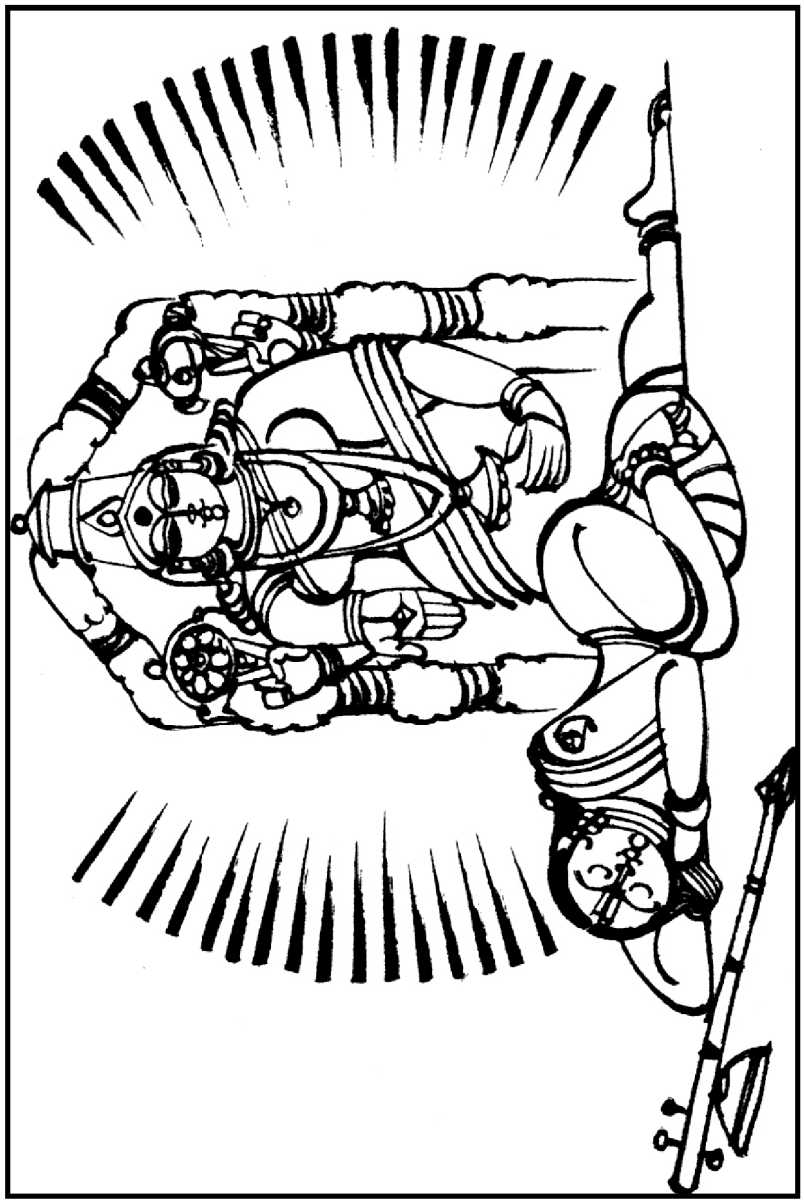

है।''- - - सूरि ने मन की बात कही। घनविष्णु अन्नमाचार्य के माता-पिता को मठ में ले गये।

माँ के मन को कष्ट न दो

उस दिन रात को लक्कमांबा ने अपने पुत्र से ताल्लपाक लौटने के लिए कहा। पुचकारा, भरमाया। परन्तु अन्नमाचार्य ने कहा- ''माँ, मुझे यहीं अच्छा लग रहा है। पेरुमाल भगवान को छोड मैं कैसे घर आ सकूँगा? क्षमा करो माँ, मुझे आशीर्वाद दो माँ।'' माँ ने अपनी ठानी। अन्नमाचार्य माता की बात टाल नहीं सकते और न ही वेंकटेश भगवान को छोड़ सकते। सोचते-सोचते रात को सो गये। सपने में एक कांति दिखी। उस में से शब्द उभरे - - - ''अन्ना! माँ के मन को दुःख न दो। ताल्लपाक वापस जाना। सब कुछ शुभ ही होगा। अन्य चिंताएँ छोडकर परमतत्त्व को जानो।'' ये परमात्मा के प्रबोधन शब्द थे। अन्नमाचार्य समझ गये कि यह प्रभु का आदेश ही है। बस, माता-पिता के साथ ताल्लपाक में वापस लौटे।

गृहस्थाश्रम

अन्नमाचार्य सोलह वर्ष के युवक हो गए। माता-पिता विवाह के प्रयत्न करने लगे। हमेशा गीत गाते रहनेवाले को कोई अपनी कन्या देने लिए तैयार नहीं हुआ। अन्नमाचार्य की दुनिया ही और थी। मंदिरों-गोपुरों में घूमते-घूमते कभी असमय में घर पहुँचते। कुछ दिनों तक तो घर की ओर ताकते ही नहीं थे। उस महाभक्त की भावनाएँ और इच्छाएँ ही अलग थीं। कुछ अनोखी परिस्थितियों में भगवद् संकल्प से तिम्मक्का और अक्कलम्मा नामक दो कन्याओं से

अन्नमाचार्य विवाह सूत्र में बन्धे। गृहस्थाश्रम धर्म का पालन करते हुए भी वे भगवान की सेवा में लीन ही रहते रहे।

कुछ दिन बीते

वह सन् 1424 का समय था। क्रोधि नाम संवत्सर में वैशाख मास का समय था। विशाखा नक्षत्र का दिन। वह अन्नमाचार्य का जन्म दिन भी था। फिर तिरुमल पहुँचे। स्वामी के दर्शन के बाद वराह स्वामी के मंदिर के पास स्थित मंटप में विश्राम कर रहे थे। बडी देर तक नींद नहीं आयी। तुरन्त अन्नमाचार्य तानपूरा संभाल कर गीत गाने की तैयारी में लगे। राग का आलाप आरंभ किया। एक प्रकार की विचित्र अनुभूति हो रही थी। हृदय में हलचल, भावों में कुछ पुतलियाँ अस्पष्ट उभर रहीं थीं। नारद की वीणा की धुन सुनाई पड़ने लगी। तुंबुर का गीत कानों तक पहुँच रहा था- - - हठात् अन्नमाचार्य का कंठ खुला। नये गीत का अवतरण हो गया - - -

राग मुखारी

ब्रह्म कड़िगिन पादमु
ब्रह्ममु ताने नी पादमु। ।।ब्रह्म।।

चेलगि वसुध गोलिचिन दी पादमु
बलि तल मोपिन पादमु।
तलकक गगनमु तन्निन पादमु
बलरिपु गाचिन पादमु। ।।ब्रह्म।।

कामिनि पापमु कड़िगिन पादमु
पामु तल निड़िन पादमु।

प्रेमपु श्रीसति पिसिकेडि पादमु
पामिड़ि तुरगपु पादमु। ।।ब्रह्म।।

परम योगुलकु परि परि विधमुल
वर मोसेगेड़ि नी पादमु।
तिरु वेंकटगिरि तिरमनि चूपिन
परम पदमु नी पादमु। ।।ब्रह्म।।

श्रीवेंकटेश्वर भगवान के पाद पद्मों का माहात्म्य इस गीत में अभिवर्णित है। वह ब्रह्म के द्वारा प्रतिदिन धोया जानेवाला पद युग्म था। त्रिविक्रमावतार (वामनावतार) में पृथ्वी और आकाश दोनों को मापने वाले पाद थे। चक्रवर्ति बलि को पाताल लोक में पहुँचानेवाले पाद भी ये ही थे। अहल्या को पापों से शमित कराने में समर्थ पाद थे। कालिय नाग के फणों पर नाचनेवाले पैर ये ही थे। भवसागर के दुःखों का नाश कर शाश्वत आनंद प्रदान करनेवाले पाद थे। ''तिरुमल क्षेत्र ही स्थिर क्षेत्र है और मैं ही परब्रह्म हूँ''- यही सत्य घोषित करनेवाले पाद थे। श्रीनिवास का पद युग्म अन्नमाचार्य के हृदय में प्रतिष्टित हो गया। यह गीत अन्नमाचार्य बार बार गाते रहे।

प्रतिदिन एक कीर्तन

भक्ति भाव समुद्र की लहरों में डोलनेवाले अन्नमाचार्य के लिए भगवान का साक्षात्कार हुआ। भगवान के चरण कमलों पर गिरे। उस समय भगवान का आदेश हुआ- ''हे वत्स! तुम धन्य हो। तुम्हारे मुँह से संकीर्तन विभव का आविर्भाव होगा। पल्लवी (टेक) और चरणों से युक्त संकीर्तन को एक स्थिरता प्रदान करो। तुम पदकविता

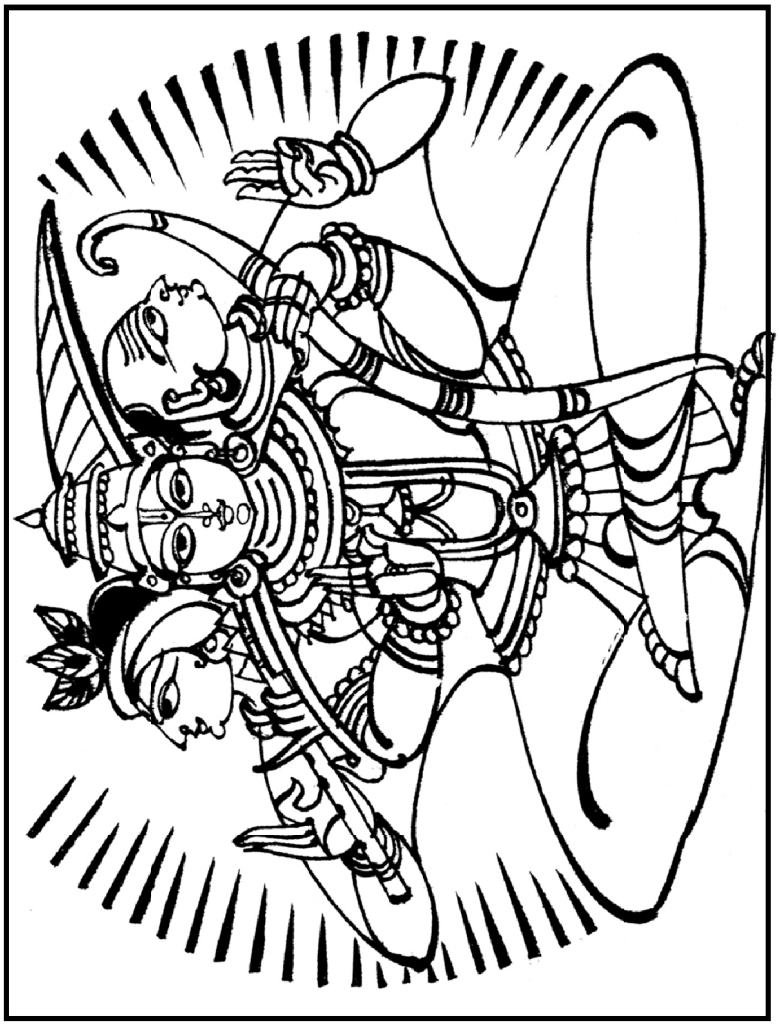

पितामह कहलाओगे। आज से संकीर्तन यज्ञ का शुभारंभ करो। प्रतिदिन कम से कम एक गीत मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ। तुम्हारे पदों के सिवा और किसी के पद मैं सुनूँगा नहीं। यह मेरी प्रतिज्ञा है। संकीर्तन रचना तुम्हारा व्रत बने।'' आदेश के साथ स्वामी अदृश्य हो गये।

देश संचार

अन्नमाचार्य ने उसी दिन से भगवान के आदेश का पालन करते हुए संकीर्तन रचना-गायन यज्ञ आरंभ कर दिया। गाँव गाँव, मंदिर-मंदिर की यात्राएँ करते हुए सामान्य जनों तक भक्ति भाव की व्याप्ति में लगे। तेलुगु में मधुर गीत सुनकर सामान्य जन भी मंत्र मुग्ध हो जाते थे। अन्नमाचार्य गीतों के अन्तरार्थ भी समझाते महदानन्द पाते थे।

अन्नमाचार्य ने अपनी यात्राओं के समय शठकोप यति के बारे में सुना। वे महान तपस्संपन्न यति श्रेष्ठ थे। जनश्रुति है कि अहोबिलम् क्षेत्र के नृसिंह स्वामी ने ही एक यति के रूप में आकर शठकोप यति को सन्यासाश्रम की दीक्षा दी है। यति की तपश्शक्ति और भक्ति-प्रपत्तियों के बारे में समाचार पाते ही अन्नमाचार्य उनके दर्शनार्थ अहोबिलम् पहुँचे। रास्ते में नंदलूरु के चोक्कनाथ स्वामी, ओंटिमिट्टा के श्री रामचन्द्र स्वामी और कड़पा के श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किये। उन पर भी अनेक संकीर्तन गाये।

अहोबिलम् क्षेत्र

अहोबिलम् का एक और नाम अहोबलम् भी है। यह एक मुख्य वैष्णव क्षेत्र है। कहते हैं कि हिरण्यकश्यप ने यहाँ से शासन किया

था। अपने पुत्र प्रह्लाद को यहीं अधिक तंग किया था। अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए यहीं विष्णु ने नृसिंह स्वरूप में उग्र स्तंभ में प्रकट हुए थे। भवनाशिनी तट पर नरसिंह स्वामी अपने नौ रूपों में विलसे हैं। यह क्षेत्र नल्लमल पर्वत क्षेणी में है। यह चीताओं का वास केन्द्र भी है। सिंहों के लिए प्रसिध्द है। इन जंगलों में से अन्नमाचार्य निर्भय हो पैदल चले थे। यहाँ दो अहोबिल क्षेत्र हैं- एक ऊपर का और दूसरा नीचे का। निचले क्षेत्र में स्वामी प्रह्लादवरद नाम से ख्यात हैं। वे लक्षमी से युक्त हैं। इसीलिए वे लक्षमीनृसिंह स्वामी हैं। ऊपरवाले क्षेत्र में उग्र नरसिंह स्वामी हैं। हिरण्यकश्यप का पेट चीरने के लिए आविर्भूत स्वामी हैं ये। अन्नमाचार्य ने दोनों दिव्य मूर्तियों के दर्शन किये और पद गाये।

शठकोप यतीन्द्र की सेवा में:

भवनाशिनी नदी तट पर एक मंटप में अपर नरसिंह स्वामी के समान शठकोप यतीन्द्र बैठे मिले अन्नमाचार्य को। वे यति के पैरों पर गिरे। आनंद के साथ यति की स्तुति की। उनके पास अन्नमाचार्य लगभग बारह वर्ष रहे। उनकी सेवा-शुश्रूषा की। वैष्णव आगमों का परिपूर्ण ज्ञान उनसे अन्नमाचार्य ने प्राप्त किया। विष्णु तत्त्व को समझे। यति के अनुसार- ''विष्णु दयामय हैं। सकल प्राणी विष्णु को प्राप्त करने योग्य हैं। कुल, जाति, वर्ण, वर्ग, धर्म आदि किसी से भगवद्प्राप्ति का संबन्ध नहीं है। शरणागति मंत्र पठन से ही भगवान भक्तवश हो जाते हैं।'' शठकोप यति के प्रबोधनों ने अन्नमाचार्य को बहुत प्रभावित किया। उन्हीं के संदेशों को अन्नमाचार्य ने अपने कीर्तनों द्वारा लोगो तक पहुँचाया। उन में से एक संदेश को लीजिए - - - -

तंदनाना आहि तंदनाना पुरे
तंदनाना भला तंदनाना - - - -
ब्रह्म एक ही परब्रह्म एक ही
परब्रह्म एक ही परब्रह्म एक ही!

व्याप्त हीनाधिक हैं इसमें नहीं
सब की अन्तरात्मा हैं श्रीहरि ही।
इस में जंतु समूह सारा एक ही
सब की अन्तरात्मा हैं श्रीहरि ही।।

राजा की तल्प निद्रा है एक ही
पास ही भूमि पर लेटे भट की निद्रा भी एक ही
पंडित ब्राह्मण की अंतिम यात्रा भूमि एक ही
चण्डाल की अंतिम वास भूमि भी एक ही।।

हाथी को तपानेवाली धूप एक ही
पृथ्वी पर श्वान को लगनेवाली धूप एक ही
पुण्यात्माओं को शरण देनेवाला नाम
पापकर्मियों की रक्षा दक्ष नाम एक ही श्रीवेंकटेश्वर नाम!

प्रसिध्दि

अन्नमाचार्य अत्यंत संस्कार युक्त हृदयी थे। उनके मत में अपने गुरु और अपने भगवान दोनों भक्तों के लिए भी सुलभ ही हैं। मानव कल्याण और विश्व मंगल के लिए वैष्णव तत्त्व को मधुर भक्ति गीतों के माध्यम से उन्होंने प्रचार और प्रसार किया है। उनके पद देश व्यापी हो गये। ये टंगुटूरु के राजा सालुव नरसिंग रायलु तक भी

पहुँचे। राजा ने अन्नमाचार्य की महिमा सुनी थी। उनके दर्शन के लिए राजा लालाइत हुए। धन, कनक, वस्तु वाहनादि सहित ताल्लपाक गाँव पहुँचे।

अन्नमाचार्य बने नरसिंगरायलु के गुरु

सालुव नरसिंग रायलु ताल्लपाक के पास के टंगुटूरु में दंडनाथ थे। वे वीर थे। ''सालुव'' उनका बिरुद था। वही उनका घरनाम भी बन गया। सालुव नरसिंग रायलु ने अन्नमाचार्य को अपना गुरु माना। उनकी अनुमति के बिना राजा कुछ नहीं करते थे। अन्नमाचार्य के आशीर्वाद बल और अपनी शक्ति के आधार पर वे पेनुगोंडा राज्य के प्रभु बने। राजा ने अन्नमाचार्य को पेनुगोण्डा राज्य में पधारने का निमंत्रण दिया। उचित रीति से उनको सम्मानित कर अपने पास ही रहने की प्रार्थना की। अपने भागवत संकीर्तन में जब तक कोई बाधा नहीं होगी तब तक उनके यहाँ रहने का वादा किया। राजा ने अन्नमाचार्य के लिए ठहरने की सारी व्यवस्थाएँ की। वैष्णव धर्म की व्याप्ति के लिए राजाश्रय को अन्नमाचार्य ने सहायक ही माना था। इसी भावना ने उनको राजा के पास रहने दिया। वहाँ से मंदिरों को केन्द्र बनाकर संकीर्तनों द्वारा विशिष्टाद्वैत मत की व्याप्ति करने लगे।

एक दिन राजा ने अन्नमाचार्य को अपने दरबार में आह्वानित किया। मंत्री, सामंत, दण्डनाथ, राजमहल की महिलाएँ आदि सब उपस्थित थे। रायलु ने आचार्य से एक मधुर संकीर्तन गाने की प्रार्थना की। गीत गाया गया - - -

क्यों अधरों पर जहाँ तहाँ कस्तूरि की कालिमा हैं
भामिनी ने प्रभु को पत्र लिखा है, इसीलिए क्या?
क्यों चकोराक्षि की आँखों में लालिमा झलक रही है
सखियाँ सोचे सनेह का अब स्वरूप यही है क्या?
स्नेहातिरेक से प्राणेश पर गिरी कनकियों के कारण
बिन व्यापे रक्तिम दृग तो ये ही है क्या?

कारागार में अन्नमाचार्य

गीत सुनकर राजा और दरबारी सब आनंद परवश हो गये। राजा ने अन्नमय्या का समुचित सत्कार किया। साथ साथ उसी समय अपनी एक इच्छा उनके सामने रखी - - - ''ऐसा ही एक मधुर गीत मेरे नाम पर भी आप बनाकर गाइए''। हरि भक्त अन्नमाचार्य दंग रह गये। आसन पर से उठकर खडे हो गये और बोले- ''हे राजा! यही तुम्हारी नीच कामना है। हरि के गुण गानेवाला मैं और किसी पर स्तुति गान गा नहीं सकता। तुम्हें और तुम्हारे दरबार को अब नमस्कार! तुरन्त दरबार से निकलने लगे। यह दरबार में राजा का अपमान था। सैनिकों को बुलाकर अन्नमाचार्य को बंदी बना कर पेश करने के लिए कहा गया। परिणामतः अन्नमाचार्य के हाथों में और पैरों में साँकलें पडीं। कैद में डाले गये। उस समय अन्नमाचार्य ने श्रीवेंकटेश्वर की प्रार्थना की। स्वर में दीनता थी - - -

अपने ही दासों का अपमान देख सकेंगे क्या आप
और क्या क्या देखेंगे, आपकी चेतना कैसे शांत है?

क्षीर सागर पर शयनित आपको
नादान देवता गण प्रार्थना करता
हम मानव प्रार्थना करते स्मरण करते
तो आप क्यों न सुनते, रक्षार्थ क्यों दौड़ न आते?

द्वारिका नगरी में प्रेम मनानेवाले आपको
द्रौपदी की व्यथा कैसे जगा सकी
वैसे ही राज सभा में बाधित मेरी विनती
अनदेखी कैसे होती, रक्षार्थ दौड़ क्यों न आते?

वैकुण्ठ में बन इन्दिरा रमण बैठे थे तो
गजराज का स्वर सुन पाये, आये दौड़
मैंने अपनी स्थिति बताई, नाता आपसे अपने पन का
सुन क्यों शीघ्र दौड़ न आये, प्रभु वेंकटेश्वर!

हरिभक्तों को अपमानित मत कर

अन्नमाचार्य के गीत की समाप्ति के साथ साथ उनकी हथकडियाँ टूटीं। सैनिक डरे। समाचार राजा को मिला। आचार्य के पास दौड़कर आये और फिर उन्हें बान्धने की आज्ञा दी। राजा ने अन्नमाचार्य से कहा- ''हे अन्नमय्या! इस बार गीत गाकर सांकलों को तोड़ो। हम देखेंगे।'' अन्नमाचार्य पर राजा की मजाक थी। महा भक्त ने राजा की आज्ञा पर मुस्कुराते हुए वेंकटपति पर फिर एक गीत गाया। राजा की आँखों के सामने अन्नमाचार्य की हथकड़ियाँ फिर टूट गिरीं। राजा को अपनी भूल समझ में आयी। अन्नमाचार्य के पैरों पर गिरे। क्षमा याचना की। तब सालुव नरसिंग रायलु को क्षमित

करते हुए कहा- ''हे राजा! कभी भी हरि भक्तों को सताना मत। भागवतों का अपमान भगवान का अपमान होता है। कलियुग में भगवत् संकीर्तन से ही भगवान तृप्त होते हैं। राजा विष्णु के समान हैं। तुम धर्म की रक्षा में लगो।'' यह एक प्रकार से राजा के लिए अन्नमाचार्य का आदेश ही था। राज्याश्रय को अपने जैसों के लिए उपयुक्त नहीं समझकर वे पुनः तिरुमल क्षेत्र की ओर चले।

अन्नमाचार्य का आर्तनाद

15 वीं सदी में धार्मिक राजनीति से घिरकर आन्ध्र प्रान्त त्रस्त था। मुसलमान मंदिरों को ध्वस्त करने में लगे थे। गायों का वध हो रहा था। स्त्रियों का मान हरण आम था। ऐसे वातावरण में अन्नमाचार्य ने तिरुपति की यात्रा कर रहे थे। एक दिन रास्ते में वे एक हनुमान के मंदिर में ठहरे। इतने में कुछ मुसलमान सैनिक घोड़ों पर आकर उस मंदिर को ढहाया। वहाँ के लोगों को डराकर उनकी संपत्ति लूटी। अन्नमाचार्य को कुछ नहीं सूझा। अपने पास संपत्ति के रूप में मात्र भगवान की पूजा मूर्ति ही थी। उसे भी वे बचा नहीं पाये। सामने हनुमान की मूर्ति थी। ढह गयी मंदिर की दीवारें और अपने ही समान निराश्रयी सामन्य जनता। अन्नमाचार्य को बहुत दुःख हुआ। दीन भाव से उन्होंने एक गीत गाया

इंदिरा रमण को ला दो, यहाँ हमारे पास
पा उनकी हैं करनी पूजाएँ समय पर, यही आस!

राक्षस मैरावण को दे दण्ड लाये राम को
वही कौशल आज दिखाओ, हे हनुमान!

घोर नाग पाशों को तोड़ा, पायी इनकी
करुणा, आओ ऐसे हे खगराज गरुड़!

श्री वल्लभ को विशेष कैंकर्य होने हैं
हिलो हे वेंकटाद्रि शेष मूर्ति!
वश में आये हे कार्तवीर्यार्जुन, इस
भगवान को ला दो न, अभी हमें।।

गाते गाते अन्नमाचार्य बेहोश जमीन पर लेटे।

हनुमान का अनुग्रह

लूट लूट कर मुसलमान सैनिक अपने अपने डेरों में आनन्दोत्सव मना रहे थे। इतने में उनके बीच एक बंदर आ धमका। देखते-देखते डेरे को भी चीर कर बढ़ा। अन्नमाचार्य की पूजामूर्तियों की थैली को लेकर सब डेरों को ध्वस्त कर दिया।

अन्नमय्या को लगा कि कोई उन्हें जगा रहा है। आँखों खोल कर देखा। सामने पूजा मूर्तियों की थैली। आनंद विभोर हो गये। ''हे भगवान, यह सब तुम्हारी ही करुणा का फल है''- भगवान वेंकटेश्वर का स्मरण किया।

अन्नमाचार्य तिरुमल पहुँचे। अपना सारा जीवन स्वामी की सन्निधि में ही व्यतीत करने का दृढ़ संकल्प उनमें था। स्वामी के सभी उत्सवों में भाग लेते थे। अनेक गीत गाये। सुप्रभात सेवा से लेकर एकांत सेवा तक के कीर्तनों को गाकर भगवान की सेवा में अर्पित करते रहे। ''श्रृंगार मंजरी'' नामक द्विपद काव्य रचा। मधुर भक्ति युक्त श्रृंगार संकीर्तन दिये। कहते हैं कि भगवान श्रीनिवास सब गीतों को उनके सामने बैठकर सुनते थे।

नव यौवन अंकुरित हो रहा है

एक दिन अन्नमाचार्य ने भगवान के सामने एक श्रृंगार युक्त पद गाया तो स्वामी ने कहा- ''हे अन्नमय्या; मधु टपकनेवाले तुम्हारे पद को सुनने के बाद मुझमें नयी जवानी जग रही है। पहले की विराग भावना अब नहीं रह गयी।'' अन्नमाचार्य की समझ में नहीं आया कि क्या उत्तर दे। उनके मुँह से वचन निकले- - -'' हे प्रभु! अपको वेद गाते रहे हैं। ज्ञानी आपकी स्तुति करते रहे हैं। देवता समूह आपका यशोगान गाता रहा है। उन सब के सामने मैं क्या हूँ! - - - एक चमड़ी का पुतला - - - मुझे दूध पिलाकर पालन-पोषण करनेवाले आप हैं। मेरी जिह्वा से आप गँवाते हैं। आप अनन्य हैं। महान हैं - - - मैं आपका दास मात्र हूँ।'' श्रीनिवास के अधरों पर मंद मुस्कान!!

कितना अपचार

अन्नमाचार्य महान भक्त हैं। उनके मुँह से निकली बात अक्षरशः सही बनती है। मन निर्मल, दृष्टि लोक मंगल की और संकीर्तन यज्ञ - - - इन के सिवा उनके सामने चौथा कुछ नहीं ठहरता था। उनके समान और कौन हो सकता है? एक दिन नैवेद्य के रूप में आम भगवान को अर्पित किये। भगवान को अर्पित फल जब प्रसाद को रूप में चखे तो खट्टे लगे। भक्त को दुःख हुआ। कितना अपराध हो गया। ''अहो स्वामी! क्षमा कीजिएगा। आपको खट्टे फलों का नैवेद्य अर्पित किया गया। बहुत बड़ा अपराध हो गया स्वामी।'' तुरन्तु वे उस आम के पेड़ के पास दौडे। उसे छूकर अन्नमाचार्य ने कहा- ''इस पेडके सभी फल मीठे हो जायें।'' बस उस पेड़ के खट्टे फल मीठे फल हो गये। अन्नमाचार्य की भक्ति ही ऐसी थी।

अन्नमाचार्य के आशीर्वाद

एक गरीब ब्राह्मण था। अपने विवाह के लिए आचार्य से कुछ धन की सहायता माँगी। उनके आशीर्वाद के बल से एक राजा ने उस ब्राह्मण का विवाह संपन्न करवाया। अन्नमाचार्य के गीत सुनते ही रोग शमित हो जाते थे। वे मात्र भक्ति गीत नहीं, श्रीवेंकटेश्वर के दिव्य मंत्र थे।

अन्नमाचार्य और पुरंदरदास

अन्नमाचार्य की महिमाओं के बारे में सुनकर और उनके संकीर्तनों को देखकर पुरंदरदास तिरुमल पहुँचे। पुरंदरदास कन्नड़ प्रान्त के महा भक्ति और गायक कवि थे। संकीर्तन रचनाकार थे। उन्हें ''कर्णाटक संगीत पितामह'' कहकर कन्नड़ प्रान्त आदर करता है। अन्नमाचार्य के दर्शन पाने की इच्छा से वे तिरुमल पहुँचे। उन्हें अन्नमाचार्य स्वयं भगवान श्रीवेंकटेश्वर सम लगे। उस समय एक हाथ में तानपूरा लेकर दूसरे हाथ से पद भाव समझाते गीत गा रहे थे अन्नमाचार्य। भक्त समूह परवशता में सुन था - - -

शरण शरण सुरेन्द्रसन्नुत, शरण श्रीसति वल्लभ
शरण राक्षस गर्व संहारक, शरण वेंकटनायक
कमलधर कमल मित्र अरु कमलशत्रु कमल पुत्र
क्रमशः आपकी आराधना के लिए आ खडे हैं बहु पराक!

अनिमिषेन्द्र मुनि दिक्पालक किन्नर सिध्द समूह
यश प्राप्त रंभादि देव कांताएँ निरीक्षणरत, बहु पराक!
प्रह्लादादि भक्त प्रवर समूह आपकी सेवा में आये हैं
बिनती सुनिएगा हे तिरुपति वेंकटाचलनायक!

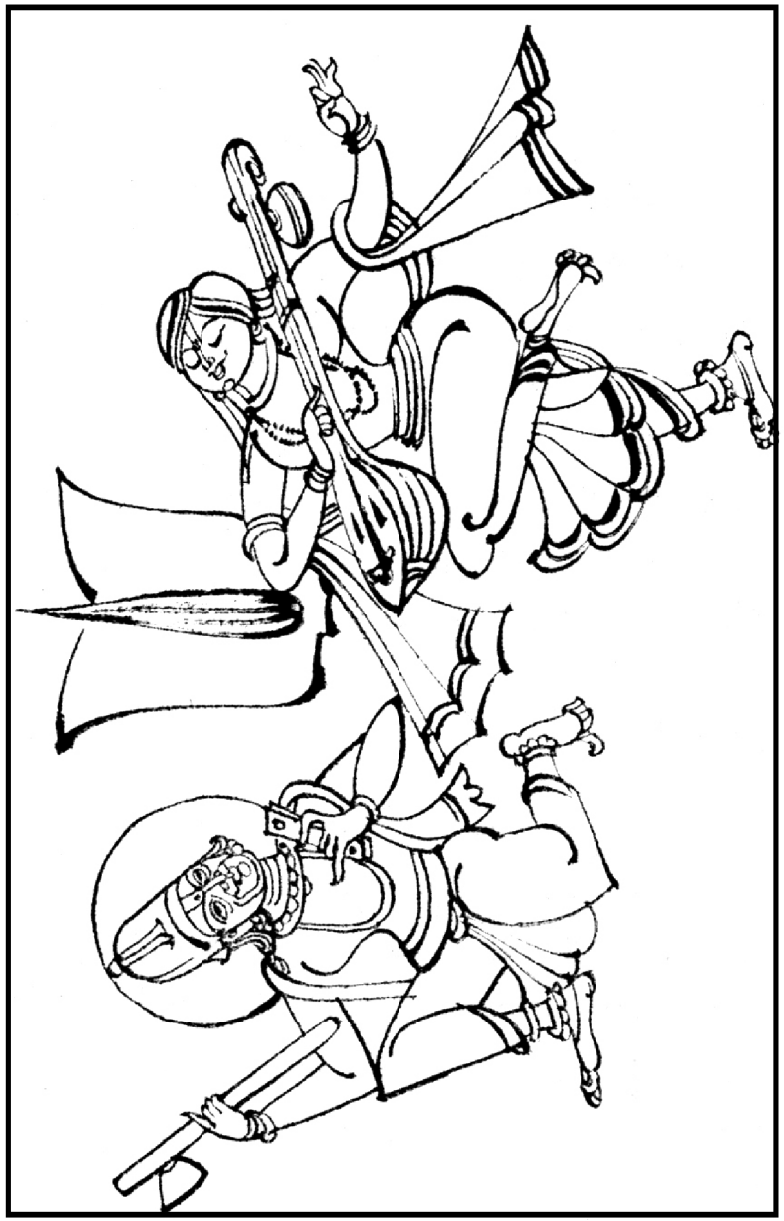

पुरंदरदास को उस दृश्य ने आकृष्ट किया। अपने आप को वे भूल गये। बिन प्रयत्न उनके मुँह से गीत उमडा - - -

शरण शरण सुरेन्द्रवंदित, शरण श्रीसति सेवित
शरण पार्वति तनय, मारुति शरण, सिध्दि विनायक!
निटलनेत्र देवी सुत, नागाभारण प्रिय
तटिल्लतांकित कोमलांग, कर्ण कुंडल धारी।

शोभित मुक्तापदक हार धारण, चतुष्क बाहु युक्त,
सुन्दर भासित हेमकंकण धारण, अंकुश पाशधारी।
महालंबोधर सुविलसित इक्षुचाप धारी,
पक्षिवाहन, नादपुरंदर विट्ठल, शरण शरण!
(पुरंदर दास कृत - सरल अनुवाद)

अन्नमाचार्य ने गीत गानेवाले युवक को देखा। उन्हें अत्यंत आनंद का अनुभव हुआ। आँखों से ही उसे पास बुलाया। पुरंदरदास ने तब कहा- ''स्वामी! मैं ने आपकी महत्ता के बारे में सुना है। आपका संकीर्तन गान सुना। ये मात्र पद नहीं। मेरे लिए परम तत्त्व के मंत्र हैं। मेरा जन्म सफल हो गया। आप सामन्य नहीं हैं। साक्षात् वेंकटेश्वर के अवतार हैं।'' अन्नमाचार्य बडे बूढे हो गये थे। पुरंदरदास को बाहों में लेकर बोले - - - ''तुम क्या सामन्य हो? श्री रंगविट्ठल के अनुग्रह के पात्र बने हो। संध्यावंदन के लिए उस भगवान से पात्र में जल मंगवा लिया है। बडे ही भाग्यशाली हो। तुम्हारे गीत कर्णाटक संगीत के लिए प्रथम पाठ बनेंगे।'' यह पुरंदरदास के लिए अन्नमाचार्य का महत् आशीर्वाद ही था।

रचनाएँ

अन्नमाचार्य की अनेक रचनाएँ थी। उनमें बहुत काल गर्भ में लीन हो गयी हैं। कुछ ताम्र पत्रों लिखे मिले। वे तिरुमल श्रीवेंकटेश्वर भगवान के संकीर्तन भाण्डागार में सुरक्षित किये गये थे। वे ही आज प्राप्त हैं। तेलुगु जनों के मन में श्रध्दा के अभाव में, अविवेक के कारण, अज्ञान के कारण, दुराशा के फल स्वरूप उस समय के अनेक ताम्रपत्रों को गलाया गया। हजारों पद खो गये। राग का मूल्य न जाननेवाली जाति ने उन ताम्रपत्रों को गलाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति की। अन्नमाचार्य ने लगभग 32,000 पद रचे। अब तो केवल 12,000 पद बचे हैं। इनका प्रकाशन तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् ने किया है। अन्नमाचार्य ने बारह शतकों की रचना की हैं। पर मात्र एक शतक प्राप्त है। उनके द्वारा द्विपद छंद में एक रामायण, वेंकटाचल माहात्म्यम्, संकीर्तन लक्षण ग्रंथ आदि अनेक रचनाएँ हैं। पर तेलुगु जाति खो बैठी है। तेलुगु सारस्वत जगत का यह दुर्भाग्य ही है। अब पचताये तो क्या होगा?

ताल्लपाक कवियों की सेवाएँ

अन्नमाचार्य के पुत्र पेद्दतिरुमलय्या, पौत्र चिन्न तिरुमलय्या, चिन्नन्न आदि भी महान कवि हैं। पद गायक हैं। इन सब को ताल्लपाक कवि कहते हैं। तेलुगु जन भाषा और भक्ति साहित्य के लिए इन की अद्भुत सेवा है। संकीर्तन (पद), द्विपद छंद में काव्य, उदाहरण काव्य (एक विशेष प्रक्रिया), दण्डक, शतक, व्याख्यापरक रचनाएँ, लक्षण ग्रंथ, रगड़ा छन्द में काव्य आदि ताल्लपाक कवियों की देन हैं। अन्नमाचार्य की सहधर्मचारिणी तिम्मक्क तेलुगु की प्रथम कवयित्री हैं। उनका पुत्र नरसिंगन्ना महा कवि हैं। ताल्लपाक कवियों ने मात्र काव्यों

की रचना ही नहीं की, बल्कि अनेक मंदिरों के निर्माण करवाये। शिथिल मंदिरों का पुनरुध्दार भी उनसे हुआ। वैष्णव मंदिरों में संकीर्तन की व्यवस्थाएँ कीं। कितने ही उत्सवों का आयोजन किया। उत्सवों में नयी पध्दतियों और नयी रीतियों का प्रवेश भी करवाया। तिरुमल मंदिर के लिए अनेक कैंकर्य नियोजित किये। मंटपों का निर्माण कराया। स्वामी पुष्करिणी की सीढ़ियाँ बनवायीं। भगवान वेंकटेश्वर की ''कल्याण सेवा'' का आरंभ भी इसी परिवार की देन है। ब्रह्मोत्सवों का पुन आरंभ और निर्वाह इन के द्वारा किया गया। इस सब की जानकारी देनेवाले शिलालेख और ताम्रपत्र मिलते हैं। संख्या में ये लगभग साठ हैं। तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् के भण्डागार में ये आज सुरक्षित हैं।

अवतार की समाप्ति

सन् 1503 में अन्नमाचार्य का स्वर्गवास हुआ। वह दुंदुभि नाम संवत्सर का फाल्गुण का महीना था। कुष्ण पक्ष में द्वादशी का दिन था। अन्नमाचार्य वयोवृध्द हो गये। वे 95 वर्ष के थे। पेद्दतिरुमलाचार्य को उन्होंने पास बुलाया। फुसफुसाते स्वर में कहा- ''हे तिम्मप्पा! आज से मेरा संकीर्तन यज्ञ समाप्त होनेवाला है। अब प्रति दिन एक संकीर्तन-समर्पण यज्ञ को तुम्हें आगे बढ़ाना होगा।'' पेद्दतिरुलय्या के हाथ में तानपूरा आदिको सौंपा। पुत्र की आँखों में आँसू! सिर पर हाथ फेरते हुए अस्पष्ट वाणी में उन्होंने पुत्र से कुछ कहा- - - हो सकता है कि वह वेंकटेश मंत्र ही हो। गंभीरता से आगे कदम बढ़ानेवाले और कारण जन्मा अन्नमाचार्य मंदिर में ही भगवान में विलीन हो गये। पेद्दतिरुमलय्या को एक उज्ज्वल ज्योति पिताजी के

शरीर से निकलकर भगवान श्रीवेंकटेश्वर में विलीन होती हुई दिखी।

अपने पिता के भगवान में लीन होने के बाद पेद्दतिरुमलय्या हर कृष्ण पक्ष के द्वादशी के दिन यह गीत गाते हुए मिलते रहे हैं-

आज है द्वादशी का दिन, तीर्थ दिवस यह आपका हे जनक!
अन्नमाचार्य पधारियेगा

अनन्त गरुड़ अरु प्रमुख सूरि जनों के साथ
घन नारदादि भागवतों के साथ साथ
दनुजमर्दन दैवशिखामणि के संग संग
मिलकर भोज स्वीकारने आइएगा।

वैकुण्ठ में रहनेवाले आळवारों में बसनेवाले
इह लोक के नित्य मुक्तों में विलसनेवाले
श्रीलक्ष्मी सहित वरदेव श्रीवेंकटेश आप भी
भोज के लिए पधारिएगा इस पावन गृह में।

संकीर्तन गाते हैं सनकादि मुनिगण
गरिमामय वेंकटाद्रि की भूमि से
जुडे हैं श्रीवेंकटगिरि लक्ष्मी विभु आप को
हमारे गृह में जोजन का निमंत्रण, आइए!

(-पेद्दतिरुमलार्य के गीत का भावार्थ)

चिन्न तिरिमलय्या भी उक्त तिथि पर अपने पितामह की तिरु आराधना करते ही रहे।

* * *